IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अरस्तु का अनुकरण सिद्धान्त

Sanjogita kumari

Deptt. of hindi

सारः अरस्तु प्लेटो के शिष्य थे उन्होंने अपने गुरु के विपक्ष जा कर अनुकरण सिद्धान्त की विवेचना की है इस पत्र में अरस्तु द्वारा दिये गए अनुकरण सिद्धान्त का विवेचन किया गया है ।अरस्तु ने अनुकरण के बारे में क्या राय दी थी उसका वर्णन किया गया है। अरस्तू ने कला को प्रकृति की अनुकृति कहा हैं । उनके लिए अनुकरण प्रकृति के बाह्य रूपों का नहीं, बल्कि उसकी सर्जन प्रक्रिया का अनुकरण है। यह बाह्य जगत से सामग्री चुनता है और उसे अपने तरीके से छाँटकर और तराश कर इस प्रकार पुनः संयोजित करता है कि वह कलात्मक अनुभूति को जन्म देती है। इसके लिए उसे विशिष्ट संवेदनशीलता और कल्पना का सहारा भी लेना पड़ता है। प्रकृति में जो कुछ अपूर्ण रह जाता है उसे वह पूर्ण रूप से प्रस्तुत कर सकता है और इस प्रकार वह प्रकृति का भी अतिक्रमण कर जाता है। अतः अनुकरण की प्रक्रिया को अरस्तू सामान्य नकल से ऊपर और सर्जनशीलता मानते थे।

संकेत शब्द ः अनुकरण.नकलए सर्जन. निर्माणए अतिक्रमण .विनाशए बाह्य .बाहरी अनुकृति. नकल

भूमिकाः.

अरस्तु के अनुसार अनुकरण ष्सृजनात्मक दर्शन की क्रिया श एवं ष्प्रायः पुनः सृजन' का ही दूसरा नाम है।"

अरस्तु काव्य कला की प्रवृत्ति को अनुकरणात्मक मानते हैं। इसे वे कला का सर्वोच्च प्रकार बताते हैं, जो मानव जीवन के सारभौम तत्त्व की अभिव्यक्ति है द्यअरस्तु के अनुसार साहित्य में जीवन का वस्तुपरक अंकन ही अनुकरण हैं जिसे हम अपनी भाषा में जीवन का कल्पनात्मक पुनर्निर्माण कह सकते हैं द्यश पूर्ण अर्थ में अनुकरण का आशय है, ऐसे प्रभाव का उत्पादन जो किसी स्थिति, अनुभूति अथवा व्यक्ति के शुद्ध प्रकृत रूप से उत्पन्न होता है। अनुकरण का अर्थ है आत्माभिव्यंजन से भिन्न, जीवन का पुनः सृजन।"प्लेटो का शिष्य होते हुए भी अरस्तू ने प्लेटो के विचारों का खंडन करके अपना भौलिक चिंतन का प्रतिपाद्य किया। प्लेटो से शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने गंभीर अध्ययन किया। अरस्तू ने पाश्चात्य काव्यशास्त्र में अनुकरण सिद्धांत प्रदान किया ।उनके अनुसार अनुकरण मानव मात्र की मनोवृत्ति है। मानव जीवन के विकास में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य की इसी मनोवृत्ति के कारण प्लेटो ने उदार कला और उपयोगी कला की विशेषता अनुकरण वृत्ति में स्वीकार की। प्लेटो से पूर्व यूनान में साहित्य को उदार कलाओं में स्थान प्राप्त नहीं था। उस समय व्याकरण, तर्कशास्त्र, गणित, संगीत, ज्योतिष आदि उदार कलाएँ मानी जाती थीं। इनमें साहित्य का कहीं उल्लेख नहीं था। प्लेटो ने ही साहित्य को सर्वप्रथम उदार कलाओं में स्थान दिया। अनुकरण 'सृजनात्मक दर्शन की क्रिया' अथवा 'प्रायः पुनः सृजन' का ही दूसरा नाम है।"

अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त

अनुकरण' की चर्चा करते समय अरस्तु की दृष्टि सौंदर्यशास्त्रीय थी और साहित्यशास्त्रीय चर्चा के लिए सौन्दर्य शास्त्रीय दृष्टि ही अधिक उपयुक्त है। अरस्तू की अनुकरण संबंधी मान्यताओं को साहित्यशास्त्र में इतना महत्व दिया जाता है, पर स्वयं उन्होंने इस अवधारणा तथा इसकी प्रकृति की स्पष्ट व्याख्या नहीं की है, या हम कह सकते हैं कि उनके उपलब्ध साहित्य में कहीं भी स्वतंत्र रूप से इस पर विचार किया गया नहीं दिखाई देता है । इतना तय है कि पाश्चात्य साहित्यशास्त्र में 'अनुकरण' एक महत्वपूर्ण अवधारणा है ।अरस्तू के अनुसार अनुकरण मानव स्वभाव की मूल प्रवृत्ति है । अनुकरण की शक्ति पशुओं में नहीं केवल मानवों में ही होती है और इसी के माध्यम से वे संसार का ज्ञान हासिल करते हैं । कविता का उत्स भी मानव की सहज प्रवृत्तियों का भी सहज संबद्ध है। अरस्तू ने कला को प्रकृति की अनुकृति' ही माना हैं । उनके लिए अनुकरण प्रकृति के बाह्य रूपों का नहीं, बल्कि उसकी सर्जन प्रक्रिया का अनुकरण है। यह बाह्य जगत से सामग्री चुनता है और उसे अपने तरीके से छाँटकर और तराश कर इस प्रकार पुनः संयोजित करता है कि वह कलात्मक अनुभूति को जन्म देती है। इसके लिए उसे विशिष्ट संवेदनशीलता और कल्पना का सहारा भी लेना पड़ता है। प्रकृति में जो कुछ अपूर्ण रह जाता है उसे वह पूर्ण रूप से प्रस्तुत कर सकता है और इस प्रकार वह प्रकृति का भी अतिक्रमण कर जाता है। अतः अनुकरण की प्रक्रिया को अरस्तू सामान्य नकल से ऊपर और सर्जनशीलता मानते थे।

१अरस्तू अनुकरण को काव्य का साधक ही नहीं काव्य के आनन्द का नियोजक भी मानते हैं । आनन्द को वे काव्य का मुख्य प्रयोजन मानते हैं । काव्य अनुकरण के माध्यम से रचा जाता है। इसलिए उसमें बाह्य संसार का चित्रण भी होता है। काव्य का आस्वाद करते हुए श्रोता ६ पाठक को जब उसमें अपने जाने.पहचाने संसार की झलक मिलती है तो उसे एक विशेष प्रकार का आनन्द होता है प्रत्यभिज्ञान या पहचान का आनन्द । यह अनुकरण की वजह से ही हो पाता है। अरस्तू ने मिमिसिस को प्रकृति की पुनः प्रस्तुति के रूप में बताया। प्लेटो के अनुसार, सभी कलात्मक सृजन नकल का एक रूप है: जो वास्तव में मौजूद है ईश्वर द्वारा बनाया गया एक प्रकार है। मनुष्य अपने अस्तित्व में जिन ठोस चीजों को देखता है, वे इस आदर्श प्रकार के अस्पष्ट प्रतिनिधित्व हैं। इसलिए, चित्रकार, त्रासदीवादी और संगीतकार एक नकल के अनुकरणकर्ता हैं, जो सच्चाई से दो बहुत दूर हैं। त्रासदी के बारे में अरस्तू ने कहा कि यह एक "एक क्रिया की नकल" है एक व्यक्ति के उच्च से निम्न वर्ग में गिरने की। अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त यह मानता है कि सभी सत्य वास्तविकता के अनुभवों से पैदा होते हैं और कोई सत्य स्वयं उत्पन्न नहीं होता। इस सिद्धान्त के अनुसार, जिस तरह से बच्चे अपने अध्यापकों के बोलने का अनुकरण करते हैं वैसे ही हम सभी अपने आसपास की वास्तविकता को भी अनुकरण करते हैं। अरस्तू इस सिद्धान्त के अनुसार दावा करते हैं कि जब हम कुछ जानने का प्रयास करते हैं तो हम उस ज्ञान का अनुकरण करते हैं जो हमारे पास पहले से ही है। इस सिद्धान्त के अनुसार हमारा ज्ञान उस संसार के ज्ञान के अभाव में उत्पन्न नहीं होता है, बल्कि हम उस ज्ञान का अनुकरण करते हैं जो हमारे पास पहले से ही मौजूद होता है। इस सिद्धान्त के अनुसार, दुनिया में कोई एक भी नया ज्ञान पैदा नहीं होता है सभी ज्ञान पहले से ही मौजूद होते हैं। आधुनिक विज्ञान तथा तकनीक इस सिद्धान्त का खंडन करते हैं।

अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त एक प्राचीन दार्शनिक सिद्धान्त है जो यूनानी दार्शनिक अरिस्टोटल के द्वारा विकसित किया गया था। इस सिद्धान्त के अनुसार, हम समझने के लिए दुनिया के वास्तविकता को अनुकरण करते हैं और कोई नया ज्ञान स्वयं नहीं उत्पन्न होता है।अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त का अर्थ है कि हम उन वस्तुओं के बारे में जानते हैं जो हमारे सामने आते हैं या जिन्हें हमने अनुभव किया है। इस सिद्धान्त के अनुसार, ज्ञान का उत्पन्न होना संभव नहीं है, क्योंकि ज्ञान हमारे अनुभवों और उस संसार के अनुभवों से उत्पन्न होते हैं जो हमारे सामने आते हैं। इस सिद्धान्त को व्यापक रूप से व्याख्यान किया जाता है कि आधुनिक विज्ञान और तकनीक नया ज्ञान उत्पन्न करते हैं, लेकिन अरस्तू का सिद्धान्त इस बात का खंडन करता है कि वे नया ज्ञान नहीं बल्कि पहले से ही मौजूद थे। इसका मतलब है कि आधुनिक विज्ञान

और तकनीक के द्वारा कोई भी नया ज्ञान उत्पन्न नहीं होता है, बल्कि उन्हें वहाँ से उठाकर उन्हें समझाया जाता है जहाँ वे पहले से ही मौजूद थे। अरस्तू के सिद्धान्त के अनुसार, ज्ञान बस एक पूर्व मौजूदा ज्ञान के अनुकरण से उत्पन्न होता है। इस सिद्धान्त को बहुत से दार्शनिक ने असत्य और विवादास्पद ठहराया है, क्योंकि वे इस बात से सहमत नहीं होते कि हम सभी वस्तुओं को अनुकरण करते हुए सीखते हैं। हालांकि, यह सिद्धान्त दार्शनिक विवादों के बावजूद भी अधिकांश स्थानों पर अपना महत्व बनाए रखा है, और इसे आज भी विभिन्न विषयों में शोध और विचार के लिए उपयोग में लाया जाता है। अरस्तू का सिद्धान्त यह भी समझाता है कि मनुष्य का ज्ञान उसके समझने के तरीके पर निर्भर करता है। अरस्तू का मानना था कि अगर कोई व्यक्ति किसी विषय को गहनता से समझना चाहता है तो उसे उस विषय को समझने के लिए समान या उससे अधिक महत्वपूर्ण ज्ञान होना आवश्यक होगा। अरस्तू का यह सिद्धान्त अर्थात समान या अधिक महत्वपूर्ण ज्ञान होने की आवश्यकता ज्ञान के संचार या संचित होने के बाद होती है। इस तरह का सिद्धान्त ज्ञान की मान्यताओं और उसके प्रभावों पर भी निर्भर होता है, जैसे कि विशिष्ट धर्म, संस्कृति या समाज के अभिव्यक्ति और शिक्षण पद्धतियों पर। यह सिद्धान्त संस्कृति और भाषा के महत्व को भी प्रोत्साहित करता है, क्योंकि इन दोनों के माध्यम से ही ज्ञान को संचारित और संचित किया जा सकता है। अरस्तू के अनुसार, ज्ञान और यथार्थता की खोज केवल शुरुआत में होती है। इसके बाद, ज्ञान को स्थायी और अधिकृत बनाने के लिए निश्चित मानकों और सिद्धांतों का उपयोग करना आवश्यक होता है। अरस्तू के सिद्धांत के अनुसार, संदेह के द्वारा हमें वस्तु के यथार्थता के प्रति अधिक उत्साह और उत्सुकता होनी चाहिए। यही हमें नए और बेहतर ज्ञान की खोज करने की प्रेरणा देता है। इसके अलावा, अरस्तू का सिद्धांत हमें समाज में संघर्ष और संघर्षों से उत्पन्न विवादों को सुलझाने के लिए उपयोगी ज्ञान प्रदान करता है।अरस्तू का सिद्धांत उस समय से भी अधिक महत्वपूर्ण है, जब हम बड़ी संख्या में दूसरों के विचारों और ज्ञान के साथ आगे बढ़ रहे हैं। अरस्तू के सिद्धांत के अनुसार, हमें हमेशा सम्भवतः अलग नजरिए से सोचना चाहिए ताकि हम विवादों और उनके समाधानों के लिए सही ज्ञान और समझ प्रदान कर सकें।

अरस्तू का अनुकरण सिद्धांत प्लेटों के अनुकरण सिद्धांत से भिन्न है तथा उसे एक नया अर्थ प्रदान करता है। प्लेटो ने कविता की तुलना चित्रकला से की है, परंतु अरस्तू ने कविता की तुलना संगीत से करते हुए स्पष्ट किया कि चित्रकला में वस्तु जगत की चीजों के स्थूल रूपाकार का अनुकरण किया जाता है। परंतु संगीत कला में मनुष्य की आंतरिक वासनाओं, वृत्तियों और भावनाओं को मूर्त किया जाता है। संगीत से तुलना करने से स्पष्ट है कि अरस्तू को ‘अनुकरण’ का व्यापक और सूक्ष्म अर्थ मान्य है। उसके लिए अनुकरण दृश्य वस्तु जगत की स्थूल अनुकृति नहीं है। उसके अनुसार कवि अपनी रचना में दृश्य जगत की वस्तुओं को जैसी वे हैं, वैसी ही प्रस्तुत नहीं करता। या तो वह उन्हें बेहतर रूप में प्रस्तुत करता है या हीनतर रूप में। उसकी दृष्टि में ‘अनुकरण’ मात्र आकृति और स्वर का ही नहीं किया जाता, वह आंतरिक भावों और वृत्तियों का भी किया जाता है।

अरस्तू के अनुसार कवि के अनुसरण का विषय कर्म-रत मनुष्य है। मनुष्य वाह्य जीवन के साथ ही मानसिक स्तर भी क्रियाशील होता है, उसके मानसिक क्रिया-कलापों का, उसकी मानसिक उधेड़ बुन का या मनोवृत्तियों के उत्कर्ष व अपकर्ष का चित्रण एक मनोवैज्ञानिक एवं रचनाशील प्रक्रिया है। कवि इसे अपनी रचनात्मक कल्पना द्वारा ही मूर्त या चित्रित कर सकता है। पलंग का चित्र निर्मित करने की प्रक्रिया में पलंग को जब चित्रकार देखता है तो ‘नेत्रों माध्यम से देख गया रूपाकार पहले चित्रकार के मानस पटल पर अंकित होता है।उसके बाद उसका मनोबिंब चित्रकार की कल्पनाशक्ति के सहारे चित्र के रूप में आकार ग्रहण करता है। इसलिए उसे नकल या स्थूल अनुकरण कहकर हेय नहीं ठहराया जा सकता।

अरस्तू ने स्पष्ट कर दिया कि कवि और चित्रकार के कला माध्यम अलग अलग हैं। चित्रकार रूप और रंग के माध्यम से अनुकरण करता है, जबकि कवि भाषा, लय और सामंजस्य के माध्यम से। जिस प्रकार संगीत में सामंजस्य और लय का, नृत्य में केवल लय का उपयोग होता है, उसी प्रकारकाव्यकला में अनुकृति के लिए भाषा का प्रयोग होता है। यह भाषा गद्य या पद्य दोनों में हो सकती है। इस स्तर पर वह संगीत कला के अधिक निकट है। भारतीय शब्दावली का प्रयोग करें तो कह सकते हैं कि अरस्तू के विचार से काव्य की आत्मा ‘अनुकृति है।अरस्तू ने अनुकरण को प्रतिकृति न मानकर पुनः सृजन अथवा पुनर्निमाण माना है। उसकी दृष्टि में अनुकरण नकल न होकर सर्जन प्रक्रिया है।

इसमें संवेदना और आदर्शों का मेल है। इन्हीं के द्वारा कवि अपूर्णता को पूर्णता प्रदान करता है। अरस्तू के अनुसार तीन प्रकार की वस्तुओं में से किसी एक का अनुकरण होता है–

1ण जैसी वे थीं या हैं। 2ण जैसी वे कही या समझी जाती हैं। 3ण जैसी वे होनी चाहिए। अरस्तू ने इन्हें प्रतीयमान, संभाव्य और आदर्श माना है। अरस्तू का अनुकरण संवेदनामय है। कल्पनायुक्त है, शुद्ध प्रतिकृति नहीं ।

अरस्तू ने अनुकृति के माध्यम, विषय और विधान का विस्तार से विचार किया। यद्यपि सभी कलाओं का मूल तत्व अनुकृति ही है, किंतु उन सबके माध्यम आदि के पारस्परिक अंतर के कारण ही वे एक दूसरी से पृथक की जाती है। अतः काव्य के विशिष्ट अध्ययन के लिए उसके माध्यम आदि का ज्ञान अपेक्षित है । माध्यम- अनुकृति के लिए छंद ही माध्यम हो ऐसा आवश्यक नहीं। भाषा का कोई भी रूपकाव्यात्मक अनुकृति का माध्यम बन सकता है। कविता मात्र छंदबद्ध प्रस्तुति नहीं है यदि ऐसा होता तो भौतिक या चिकित्साशास्त्र की छंदबद प्रस्तुति कविता कहलाती हैं।

अरस्तू और प्लेटो के सिद्धांत में अंतर

प्लेटो और अरस्तू दोनों नकल या नकल की अवधारणा में विश्वास करते थे, लेकिन इसके उद्देश्य और मूल्य पर उनके अलग-अलग विचार थे।

प्लेटो का मानना था कि कला और साहित्य वास्तविकता की हीन प्रतियां हैंए और इसलिएए नकल एक मात्र भ्रम है जो समाज के भ्रष्टाचार को जन्म दे सकता है। उन्होंने तर्क दिया कि कला खतरनाक हो सकती है क्योंकि यह वास्तविकता को विकृत कर सकती हैए और इससे उत्पन्न होने वाली भावनाओं का लोगों के व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। प्लेटो के लिएए कला का असली उद्देश्य लोगों को संवेदी अनुभव की त्रुटिपूर्ण दुनिया के बजाय रूपों या विचारों की आदर्श दुनिया को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करना था। दूसरी ओरए अरस्तू का मानना था कि नकल एक प्राकृतिक मानवीय प्रवृत्ति है जिसका उपयोग लोगों को शिक्षित करने और ऊपर उठाने के लिए किया जा सकता है। उन्होंने तर्क दिया कि कला न केवल वास्तविकता की एक प्रति है बल्कि मानव प्रकृति और हमारे आसपास की दुनिया के बारे में आवश्यक सत्य भी प्रकट कर सकती है। अरस्तू का मानना था कि कला कैथर्सिस प्रदान कर सकती हैए भावनाओं का शोधन जो लोगों को उनकी भावनाओं को समझने और सहानुभूति विकसित करने में मदद कर सकता है। उनके लिएए कला का उद्देश्य वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करना थाए इससे बचना नहीं और लोगों को दुनिया की सुंदरता और जटिलता की सराहना करने के लिए प्रोत्साहित करना था।

इसलिए, जबकि प्लेटो और अरस्तू दोनों नकल की अवधारणा पर सहमत थे, इसके उद्देश्य और मूल्य पर उनके विचार मौलिक रूप से भिन्न थे नकल पर प्लेटो और अरस्तू के विचारों के बीच एक और महत्वपूर्ण अंतर कलाकार की भूमिका थी। प्लेटो का मानना था कि कलाकार केवल नकल करने वाले होते हैं, और उनके कार्यों का कोई वास्तविक मूल्य नहीं होता है। उन्होंने यहां तक कहा कि कवियों को उनके आदर्श समाज से प्रतिबंधित कर दिया जाना चाहिए क्योंकि उनके काम युवाओं को भ्रष्ट कर सकते हैं। दूसरी ओर, अरस्तू का मानना था कि समाज में कलाकारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने तर्क दिया कि कलाकार केवल नकल करने वाले नहीं थे बल्कि रचनाकार थे जो दुनिया के बारे में महत्वपूर्ण सत्य प्रकट कर सकते थे। अरस्तू के लिए, कलाकार का काम नकल का उपयोग कला के कार्यों का निर्माण करने के लिए करना था जो लोगों को शिक्षित और प्रेरित कर सके। नकल पर प्लेटो और अरस्तू के विचारों के बीच में एक और अंतर था वह था कला और वास्तविकता के बीच संबंध। प्लेटो का मानना था कि भौतिक दुनिया रूपों या विचारों की दुनिया की एक अपूर्ण प्रति थी, जो कि सच्ची वास्तविकता थी। इसलिए, उनका मानना था कि कला एक प्रति की नकल है और इसका कोई वास्तविक मूल्य नहीं है। हालाँकि, अरस्तू का मानना था कि भौतिक दुनिया परम वास्तविकता थी और कला इसके बारे में महत्वपूर्ण

सत्य प्रकट कर सकती है। उन्होंने तर्क दिया कि कला का उपयोग वास्तविकता की जटिलताओं का पता लगाने और लोगों को इसे बेहतर ढंग से समझने में मदद करने के लिए किया जा सकता है।

प्लेटो और अरस्तु ए उनके उद्देश्यए मूल्य और वास्तविकता से संबंध पर अलग.अलग विचार थे। प्लेटो का मानना था कि नकल एक मात्र भ्रम है जो समाज के भ्रष्टाचार को जन्म दे सकता हैए जबकि अरस्तू का मानना था कि नकल एक प्राकृतिक मानवीय प्रवृत्ति है जिसका उपयोग लोगों को शिक्षित और उन्नत करने के लिए किया जा सकता है। प्लेटो ने कलाकारों को नकल करने वालों के रूप में देखाए जिनका कोई वास्तविक मूल्य नहीं थाए जबकि अरस्तू ने उन्हें ऐसे रचनाकारों के रूप में देखा जो दुनिया के बारे में महत्वपूर्ण सत्य प्रकट कर सकते थे। अंत मेंए प्लेटो का मानना था कि भौतिक दुनिया रूपों या विचारों की दुनिया की एक अपूर्ण प्रति थीए जबकि अरस्तू का मानना था कि भौतिक दुनिया परम वास्तविकता थी।

नकल पर प्लेटो और अरस्तू के विचारों के बीच एक और अंतर भावना और कला के बीच संबंधों की उनकी समझ थी। प्लेटो का मानना था कि कला क्रोध और वासना जैसी खतरनाक भावनाओं को जगा सकती हैए जिससे अनैतिक व्यवहार हो सकता है। उन्होंने तर्क दिया कि कला को समाज को भ्रष्ट करने से रोकने के लिए सेंसर किया जाना चाहिए। इसके विपरीतए अरस्तू का मानना था कि कला सहानुभूति और करुणा जैसी सकारात्मक भावनाओं को जगा सकती है और ये भावनाएं लोगों को नैतिक रूप से विकसित करने में मदद कर सकती हैं। उन्होंने तर्क दिया कि कला को सेंसर नहीं किया जाना चाहिए बल्कि लोगों को उनकी भावनाओं के बारे में गंभीर रूप से सोचने और उनके नैतिक चरित्र को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

स्पष्ट है कि अरस्तु के अनुसार अनुकरण विषय जीवन का बहिरंग पक्ष ही नहीं हैं, अपितु अंतरंग पक्ष- विचार, अनुभूति, कल्पना आदि भी हैं और इन दोनों में भी अंतरंग पक्ष का प्राधान्य है, क्योंकि अनुकरण यथार्थ रूप का ही नहीं, संभावित रूप का भी किया जाता है। वे वस्तु "वस्तु कैसी है' की अपेक्षा 'वस्तु कैसी होनी चाहिए या हो । सकती है' पर अधिक जोर देते है। फिर भी अरस्तू के अनु- करता सिद्धांत की परिधि भी बड़ी संकुचित है। उसमें कवि की अंतः चेतना को उतना महत्व नहीं दिया गया जितना कि देना चाहिए था। के

समग्रतः कहा जा सकता है कि अरस्तू ने अनुकरण को प्लेटो की अपेक्षा भले ही नवीन अर्थो में प्रयोग किया हो और उसमें 'शिव' की अपेक्षा' सौदर्य' की ओर बल दिया हो, उसे दार्शनिक व नीतिज्ञों के चंगुल से भी पृथक किया हो, पर वह उसके आंतरिक पक्ष की सतह तक नहीं पहुँच पाए। फिर भी यह सिद्धांत अपना महत्व रखता है। अंग्रेजी के आलोचक जार्ज सेण्ट्सबरी के अनुसार, "यद्यपि यह सिद्धांत विवादास्पद रहा है : फिर भी. इसका महत्व कम नहीं है, क्योंकि यही पहला सिद्धांत है जिसने काव्य में प्रकृति और कला के तत्वों का पारस्पारिक अनुपात निर्धारित करने का प्रयत्न किया है ।

संदर्भ ग्रंथ -

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र . डॉ॰ देवन्द्रनाथ शर्मा ।

2.॰ भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र . डॉ॰ रामपूजन तिवारी ।

3. साहित्यिक निबंध - डॉ गणपतिचंद्र गुप्त ।

4.अरस्तु का काव्य सिद्धान्त. डॉ नागेन्द्र।